लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-१०३
प्रधानसम्पादकः
प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री
(कुलपतिः)

देवालयस्य दीपः

मिर्ज़ा ग़ालिब कृत-फ़ारसी-काव्यस्य
चेराग़े दैर
इत्यस्य
संस्कृतपद्यानुवादः

अनुवादिका
डॉ. नाहीद आबिदी

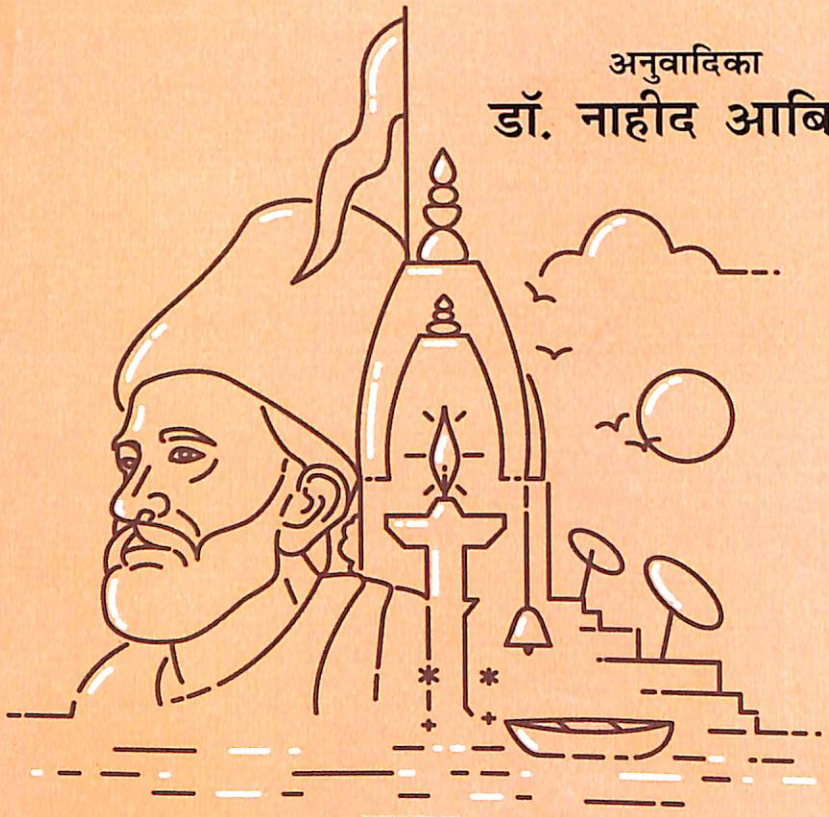

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
संसदः अधिनियमेन स्थापितः
(प्राक्तानं राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम्, मानितविश्वविद्यालयः)
भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयाधीनः

Prof. Rajendra Mishra
M.A.D. Phl. (Alld) D.Litt. (Shimla)
Ex Vice-Chancellor
Sampurnanad Sanskrit University
Varanasi-221002 (U.P., INDIA)

Grams :
Phones :
Office : (0542) 2204089
: (0542) 2204213
Res : (0542) 2206617
Fax : (0542) 2206617

नान्दीवाक्

स्वातंत्र्योत्तर संस्कृतरचनाधर्मिता ने जहाँ काव्य, नाट्य, कथा, उपन्यास, यात्रावृत्त एवं संस्मरणादि के क्षेत्र में पुष्कल वाङ्मय प्रस्तुत किया है, सम्भावनाओं के अनेक नये वातायन खोले हैं वहीं-अनुवाद के क्षेत्र में भी युगान्तर उपस्थित किया है। बख़्तियार खिलजी के आक्रमणकाल में नालन्दा, विक्रमशिला तथा जगद्दल विहार के आचार्यगण, जो मूल्यवान् ग्रन्थ गधों एवं घोड़ों की पीठ पर लादकर, तिब्बत भाग जाने में सफल हो सके थे, उन्हीं ग्रन्थों का **भोटभाषानुवाद** आज उनके अस्तित्व का साक्षी है। अन्यथा, मूल संस्कृतग्रंथ विनष्ट हो जाने के कारण, उनका आत्यान्तिक लोप निश्चित था। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने ऐसे अनेक महनीय ग्रंथों को, तिब्बती से हिन्दी में रूपान्तर कर, विद्वज्जगत् से परिचित कराया है।

परन्तु बख़्तियार से भी बहुत पूर्व, जब ख़लीफा उस्मान (६४४-६५६ ए. डी.) ने भारत की ओर सर्वप्रथम दृष्टिपात किया और उसके बाद, जब बगदाद के अब्बासीवंशीय ख़लीफाओं मंसूर (७५३-७७४) तथा हारून (७८६-८०९)

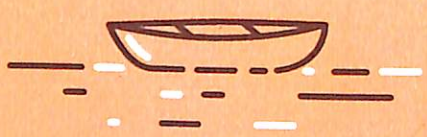

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

संसदः अधिनियमेन स्थापितः

(प्राक्तानं राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम्, मानितविश्वविद्यालयः)

भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयाधीनः